सर्वोच्च आनन्द का आनन्द मनाना

एक सिद्धयोग विद्यार्थी की ओर से पत्र

१ अक्टूबर, २०१६

प्रियजनो,

बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि की शुभकामनाएँ! महोत्सव के इस आनन्दपूर्ण, उज्जवल एवं मंगलमय माह की आप सभी को शुभकामनाएँ।

जब मैं बाबा जी के बारे में सोचती हूँ, तब उनकी ओज भरी आँखें, उनके चमचमाते भगवे वस्त्र और मुखमण्डल पर खेलती स्नेहिल मुस्कान — ये सब मेरे मन में उभर आते हैं और मैं पाती हूँ कि मेरे हृदय में विशुद्ध प्रेम उमड़ रहा है। मैं बाबा जी से कभी प्रत्यक्षतः तो नहीं मिली, फिर भी अनेक वर्षों से उनकी पुस्तकें पढ़कर व फ़ोटो और वीडिओ में उनके दर्शन कर मुझे महसूस होता कि हमारे बीच प्रेम का एक शाश्वत बन्धन है। मुझे महसूस होता है कि वे मेरे बाबा जी हैं वैसे ही, जैसे वे उन सबके बाबा जी हैं जिन्हें उनका कृपा-स्पर्श प्राप्त हुआ है।

पूरे अक्टूबर माह में, विश्वभर के सिद्धयोगी बाबा जी व उनकी धरोहर का महोत्सव मनाएँगे — उनकी महासमाधि की पुण्यतिथि पर, उस पूर्णिमा पर जब अपनी भौतिक देह त्यागकर बाबा जी ब्रह्मलीन हो गए थे। बाबा जी की महासमाधि की सौर वर्षगाँठ २ अक्टूबर को है और चान्द्र वर्षगाँठ इस वर्ष १५ अक्टूबर को है।

यह माह महोत्सव मनाने का है। बाबा जी व गुरुमाई जी ने हमारे अन्दर जो अन्तर-प्रेम जाग्रत किया है, यह समय है उस प्रेम में आनन्दित होने का और इस प्रेम को औरों के साथ बाँटने का। और इसीलिए अक्टूबर माह की विषय-वस्तु है ‘आनन्द मनाना’।

‘आनन्द मनाना,’ इसके लिए अंग्रेज़ी शब्द है “रिजॉइस” (Rejoice)। यह शब्द लैटिन भाषा के दो मूल शब्दों से बना है। पहला ‘री’, जिसका अर्थ है “बार-बार” और “लौटना या वापस आना”। “रिजॉइस”

शब्द का दूसरा भाग, फ्रेंच शब्द 'जॉइ', से आता है जिसके अर्थ हैं, "आनन्द," "खुशी", और "महोत्सव"। इस प्रकार 'आनन्द मनाना' — यह विषय-वस्तु हमें चिरस्थायी आनन्द तक पहुँचने का मार्ग बताती है : अपने अन्तर्निहित आनन्द की ओर पुनः-पुनः लौटना या वापस आना। २०१६ के गुरुमाई जी के सन्देश के अध्ययन व अभ्यास से मुझे जो समझ प्राप्त हुई है, यह विषय-वस्तु उस समझ के बिल्कुल अनुरूप है।

वर्ष २०१६ के लिए श्री गुरुमाई का सन्देश है :

परमानन्द में
स्थिर होने की दिशा में
दृढ़ता के साथ
आगे बढ़ो

इस माह, परम आत्मा के साथ अपने ऐक्य का महोत्सव मनाते हुए हम गुरुमाई जी के सन्देश में बताए गए लक्ष्य की प्राप्ति के और निकट आते जा रहे हैं, जो है आनन्द की अवस्था में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित होना।

मैंने हाल ही में गुरुमाई जी के सन्देश को अभ्यास में उतारने की अपनी वचनबद्धता की समीक्षा की। मैंने पाया कि मेरा ध्यान अपने दैनिक काम-काज व ज़िम्मेदारियों की ओर जा रहा था और मैं ध्यान के अपने नियमित अभ्यास के लिए समय नहीं दे रही थी। इसलिए मैंने तय किया कि मैं अब से प्रतिदिन कम से कम बीस मिनट के लिए ध्यान करूँगी और मैंने तुरन्त ही इससे होने वाले लाभ का अनुभव किया। दिन की शुरुआत के लिए जब मैं अपने ध्यान-कक्ष से बाहर निकलती हूँ, तब महसूस करती हूँ कि मैं एकाग्र हूँ और अपने जीवन की ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए तैयार हूँ। मैं पाती हूँ कि मेरे आस-पास के लोग, विशेषकर मेरे पति और बच्चे, मेरी स्थिति से प्रभावित होते हैं और अब मेरे घर का वातावरण और भी खुशनुमा हो गया है।

सच कहें तो, 'रिजॉइस' यानी 'आनन्द मनाने' का एक अर्थ और भी है, "दूसरों को खुशी व आनन्द देना"। हाल ही के मेरे अनुभव ने मुझे दिखाया है कि आनन्दपूर्ण अन्तर-आत्मा पर एकाग्र होकर, मैं अपने आस-पास के लोगों को भी आनन्दित रहने लिए प्रेरित कर सकती हूँ व इसमें उनकी मदद कर सकती हूँ। यह जानकर बहुत अच्छा लगता है कि जब हम आत्मा में आनन्दित होते हैं, तब हम अपने परिवारों के लिए, अपने मित्रों के लिए और पूरे विश्व के लिए भी आशीर्वाद प्रसरित करते हैं।

इस माह बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में आयोजित सार्वभौमिक सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेकर, हम एक सार्वभौमिक संघम् के रूप में, वैश्विक हॉल में एक-साथ आनन्द मनाएँगे।

यह एक मंगलमय कार्यक्रम है जिसमें श्री गुरु अन्तर की आध्यात्मिक शक्ति को जाग्रत करने के लिए दिव्य शक्ति प्रदान करते हैं। इस वर्ष के शक्तिपात ध्यान-शिविर का शीर्षक है, 'निःश्रेयस का अरुणोदय'। यह ध्यान-शिविर विश्वभर के सिद्धयोग आश्रमों, ध्यान केन्द्रों और प्रतिभागी नामसंकीर्तन व ध्यान समूहों में २२ या २३ अक्टूबर को आयोजित होगा।

शक्तिपात ध्यान-शिविर, नए जिज्ञासुओं के लिए आध्यात्मिक जागृति का उपहार लाता है। सिद्धयोग विद्यार्थियों के लिए यह ध्यान-शिविर एक वार्षिक सुअवसर है जिसमें हम अपने हृदय में दिव्य प्रेम की चिंगारी को पुनः प्रज्ज्वलित करते हैं और सिद्धयोग अभ्यासों के प्रति अपने उत्साह को पुनः नवीन करते हैं।

हर बार ध्यान-शिविर में भाग लेने पर मैं आनन्द मनाती हूँ कि मुझे शक्तिपात का वरदान और सिद्धयोग पथ पर चल पाने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ है। ध्यान-शिविर के दौरान मैं अपने हृदय के प्रेम से पुनः जुड़ जाती हूँ और उस परम आनन्द की अनुभूति करती हूँ जो मेरा मूल स्वरूप है। ध्यान-शिविर के पूर्ण होने तक मैं अहेतुक प्रेम की उस अवस्था में और परम सत्य की उस ललक पर लौट आती हूँ जो बहुत सालों पहले हुए शक्तिपात का मेरा अनुभव था।

आज, १ अक्टूबर को, शक्तिपात ध्यान-शिविर के महत्त्व के बारे में एक सत्संग का सीधा ऑडिओ प्रसारण, कैलिफ़ोर्निया के ओकलैण्ड स्थित सिद्धयोग आश्रम से किया जा रहा है। इसका शीर्षक है, 'प्रतिमीलन – आत्मा के साथ ऐक्य'। यह सत्संग ऑडिओ वेबकास्ट द्वारा रविवार, २० नवम्बर २०१६ तक उपलब्ध रहेगा।

बाबा जी की महासमाधि के सम्मान में, इस माह प्रतिदिन सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर हमें बाबा जी के दर्शन का उपहार, उनकी सिखावनियों को पढ़कर और उनके फ़ोटो देखकर मिलेगा।

आप में से कुछ शायद ऐसा भी करना चाहें जैसा मेरे ग्यारह वर्ष के बेटे को करना अच्छा लगता है, यानी आप १५ अक्टूबर को बाबा जी की महासमाधि की चान्द्र पुण्यतिथि तक, जैसे-जैसे चन्द्रमा अपनी पूर्णता पर पहुँचेगा, तब तक के फ़ोटो लेकर उन्हें सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर भेज सकते हैं।

मेरे परिवार का एक और प्रिय अभ्यास है, सिद्धयोग पथ वेबसाइट की 'नेचर-गैलरी' (Nature Gallery) देखना। सोने से पहले हम एक-साथ बैठकर फ़ोटो देखते हैं। प्रत्येक फ़ोटो हमें याद दिलाता है कि हमारे आस-पास की हर चीज़ में भगवान विद्यमान हैं; जब हम सो जाते हैं तब ये पावन छवियाँ हमारे मन में अंकित रहती हैं।

इस माह मैं आप सभी को उस पूर्ण प्रेम का आनन्द मनाने के लिए आमन्त्रित करती हूँ जो आपका मूल स्वरूप है — वह पूर्ण प्रेम जिसे बाबा जी और गुरुमाई जी ने हमारे लिए प्रकट किया है।

वैश्विक हॉल में आप सबके साथ बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में होने वाले सार्वभौमिक सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेने की मुझे प्रतीक्षा रहेगी। मेरी कामना है कि हम सभी यथार्थ रूप में 'आनन्द मनाने' का अनुभव करें और निरन्तर इस आनन्द में रहते हुए अपने आस-पास के संसार का भी उत्थान करें।

शुभकामनाओं सहित,

वसुधा पिगट
सिद्धयोग विद्यार्थी

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।